चरित-चित्रण

लेखक

पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी

मुद्रक और प्रकाशक

रघुनन्दन शर्म्मा, हिन्दी प्रेस, प्रयाग

प्रथम बार] आश्विन सं० १९८६ [मूल्य ॥=)

निवेदन

इस पुस्तक में १६ जीवनचरितों का संग्रह है। ये चरित समय समय पर सरस्वती में प्रकाशित हो चुके हैं। प्रकाशन का समय प्रत्येक चरित के अन्त में दे दिया गया है। इन चरितों के चार विभाग किये जा सकते हैं। यथा—

(१) कवि, लेखक, हिन्दी के हितैषी, सम्पादक, विद्वान् , इतिहासवेत्ता और वक्ता

(२) शाह, शाहंशाह, सुलतान और अमीर

(३) राजनीतिज्ञ और राजकीय-उच्चपदाधिकारी

(४) नूतन-धर्म्म-प्रवर्तक

ये सब चरित इस क्रम से इस पुस्तक में रक्खे गये हैं। इस क्रम में लिखे जाने के समय का भी ख़याल रक्खा गया है। अर्थात् आगे पीछे जो चरित जिस समय लिखा गया है उसी समय के अनुसार उसे स्थान दिया गया है।

मासिक पुस्तकों में प्रकाशित चरित कालान्तर में अप्राप्य नहीं, तो दुष्प्राप्य, अवश्य ही हो जाते हैं। मिस्टर जैनवैद्य, पण्डित दुर्गाप्रसाद मिश्र और लालबलदेवसिंह आदि ने, अपने अपने समय में, साहित्य-सम्बन्धी जो काम किया वह भुलाये जाने योग्य नहीं परन्तु साधनों के अभाव में वह दिन

पर दिन विस्मृत सा होता जारहा है। अतएव ऐसे सत्पुरुषों की कीर्त्ति का जो गान समय पर हुआ था वह पुस्तक-विशेष में निबद्ध होजाने से सहज ही सुना और जाना जा सकता है।

यही बात और भी प्रसिद्ध पुरुषों के विषय में चरितार्थ है। वाजिदअली शाह का चरित कितनी ही पुस्तकों में प्रकाशित अवश्य हो चुका है; परन्तु इस पुस्तक में उनके विषय में जो कुछ लिखा गया है, सम्भव है, उसका प्राप्ति-स्थान ऐसा हो जिस तक औरों की पहुँच न हो सकी हो; अतएव, क्या आश्चर्य, जो उसमें कुछ न कुछ नवीनता हो। रहे राजकीय पुरुष, सो उच्चपदस्थ होनेके कारण अपने अपने समय में वे ऐसे अनेक काम कर गये हैं जिनसे बहुत कुछ शिक्षा-प्राप्ति हो सकती है। बादशाहों और अमीरों के विषय में भी यही बात कही जा सकती है। उनके चरितों के पाठ और परिशीलन से और कुछ नहीं तो थोड़ा बहुत मनोरंजन तो अवश्य ही हो सकता है। अतएव उनका एकत्रीकरण और प्रकाशन भी व्यर्थ नहीं।

पुस्तकान्त में जिस धर्म्माधिष्ठाता का चरित रक्खा गया है उसके अध्यवसाय और उसके कार्य्यकौशल की महत्ता इस लेख के अवलोकन हीसे अच्छी तरह ध्यान में आ जाने योग्य है।

दौलतपुर, रायबरेली
२ जून १९२९
—महावीरप्रसाद द्विवेदी

विषय-सूची